

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निर्दलीय प्रकाशन का
स्वर्ण जयंती वर्ष

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

वर्ष-५४/१६ अंक- ७१

भोपाल १८ सितंबर, डाक १९ सितंबर २०२६

भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित

पृष्ठ - ८

मूल्य १+१/- (संप्रेषण/स्वैच्छिक)

**नकली व्यक्तित्व गढ़ा जिनने वे भरमाए हैं।
सच्चे लोग कभी नहीं झांसे में आए हैं।।**

एक समय था जब कहा जाता था कि प्रचार के मामले में साम्यवादी अग्रणी रहते हैं लेकिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उसके राजनीतिक संगठन भाजपा ने सिद्ध कर दिया कि प्रचार के मामले में दुनिया उनका कोई मुकाबला नहीं है।

भारत में संघी प्रचार तंत्र कांग्रेस और अन्य प्रगतिशील दलों की तुलना में तंगड़ा रहा है। संघ के स्वयं सेवक और उसकी पहली राजनीतिक औलाद जनसंघ के लोग झूठ को सच्चाई के कपड़े औढ़ाकर खड़ा करने में उस्ताद माने गए और उनका प्रचार तंत्र इतना तंगड़ा रहा कि शनै-शनै लोग उनके झूठ को धोखा का शिकार होने लगे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना वर्ष १९२५ में दशहरे के दिन हुई थी तब उसके संस्थापक हेडगेवार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे लेकिन लोग यह नहीं भांप पाए कि वे अंदर ही अंदर कांग्रेस को तोड़ने का काम कर रहे हैं तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे अंग्रेजों से मिले हुए हैं। गत वर्ष जब संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे हुए तो शुरुआती समारोहों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बड़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा संघ के कार्यों की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की। वैसे भी वे कई बार अपने भाषणों में मुस्लिम वोट हासिल करने के लिए कहते थे कि कुरान अल्लाह के नाम से भरी हुई है। अगर कोई हिंदू ईस्लाम के खिलाफ है तो वह हिंदू नहीं है। यही बात संघ के स्वयंसेवक से लेकर सरसंघचालक तक कहते रहे लेकिन उनके कामों और कारनामों से यह स्पष्ट हो गया कि वे कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। सरसंघ चालक १० जनवरी २०२६ को वृंदावन में कह रहे थे हिंदू राष्ट्र बनकर रहेगा। इसके पूर्व बंगलुरु में वे यह कहकर आए कि भारत में रहने वाले सभी लोग हिंदू हैं, देश में कोई गैर हिंदू है ही नहीं। उनका कहना था कि गैर हिंदू कहने वाले लोगों के पूर्वज भी हिंदू थे। वे संघ के 'नए क्षितिज' कार्यक्रम में बोल रहे थे लेकिन इसके पूर्व वर्ष २०२५ में जब धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने दिल्ली से मथुरा तक हिंदू राष्ट्र की स्थापना के घोषित उद्देश्य को लेकर जो यात्रा निकाली उसी ना केवल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ बल्कि भाजपा के कार्यकर्ताओं से लेकर मुख्यमंत्रियों ने तक समर्थन दिया। ऐसे मुख्य मंत्रियों में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के नाम गिनाए जा सकते हैं। संघ के क्षेत्र प्रचारक तो धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के साथ साथे की तरह रहते ही थे।

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि संघ की शाखाओं में सुबह से ही स्वयं सेवकों में गैर हिंदुओं के खिलाफ घृणा व

अग्र विचार
विचार प्रवाह-१९४



कैलाश आदमी

नफरत भरी जाती है और यही कारण है कि खासकर मोदी राज में मुसलमानों और ईसाइयों का रहना कठिन हो गया है। कट्टरपंथी हिंदू संघ-भाजपा के प्रचार में बहकर गैर हिंदुओं को अपने मकान किराए पर नहीं देते और यदि किसी मकान में कोई गैर हिंदू रह रहा है तो उसके विरुद्ध हमलावर हो जाते हैं। संघ की खास निगाह वक्फ की संपत्ति पर रहती है। संघ के लोग नहीं चाहते कि वक्फ के पास जो भूमि है वह रहे नही जाए। खासकर मुसलमानों को उनकी संपत्ति से बेदखल करने हेतु नए-नए कानून हैं।

बनाए जा रहे हैं।

सभी जानते हैं कि ३० जनवरी १९४८ को नाथूराम गोडसे नामक जिस शख्स ने महात्मा गांधी की हत्या की वह संघ का स्वयं सेवक रहा और हत्या करने के पूर्व हिंदू महासभा से जुड़ा हुआ था। साध्वी प्रज्ञा सिंह जो खुलेआम गोडसे की प्रशंसा करती थी, को भोपाल से लोकसभा का भाजपायी प्रत्याशी बनाया गया तो संघ-भाजपा कार्यकर्ताओं ने उसके पक्ष में जी जान से काम किया। विजयी होने पर प्रज्ञा ने कहा कि वे गोडसे को देशभक्त मानती हैं और मानती रहेंगी। इस पर उन्हें भाजपा से निकाल दिया जाना लेकिन मोदी ने केवल इतना कहा कि वे उससे संबंध नहीं रखेंगे। इसके विपरीत आगे चलकर कंगना रनौत को भाजपा ने लोकसभा चुनाव में उतारा और वे विजयी रहईं। उन्होंने कहा कि वे भाजपा आने के पहले और आज भी गोडसे की प्रशंसा कर हैं। यही नहीं उन्होंने कहा कि देश १९४७ में नहीं २०१४ में मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आजाद हुआ है। इतना सब कुछ होने के बाद भी उन्हें पार्टी में भरपूर इज्जत मिलती है।

जो लोग मोदी के जन्मदिन पर दीवाली मना रहे हैं उनसे पूछा जाना चाहिए कि उन्हें किस बात की खुशी है? क्या मोदी राज में महंगाई कम हुई है, बेरोजगारी घटी है, घृणा और नफरत का वातावरण कम हुआ है अथवा भ्रष्टाचार में कमी आई है तो जवाब मिलेगा- नहीं। इसके बावजूद मोदी सरकार शिक्षा और रोजगार के मुद्दे पर आंदोलन करने वाले छात्रों पर लाठी डंडा और गोलियां बरसाती है तो दूसरी ओर किसानों और श्रमिकों द्वारा सवाल उठाए जाने पर उनके विरुद्ध भी डंडे बरसाए जाते हैं। संघी भाजपायी झूठे प्रचार के बल पर भले ही वोट बैंक हथिया लेते हों लेकिन सच्चे लोग झांसे में नहीं आते।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

नकली व्यक्तित्व गढ़ा जिनने वे भरमाए हैं।

सच्चे लोग कभी नहीं झांसे में आए हैं।।

मटकुली से तामिया की ओर: पातालकोट की सैर

– सुरेश पटवा

पथिक को याद आया- जब अंग्रेज रेल लाईन पिपरिया से बिछा रहे थे तब इन जंगलों का सीना छलनी कर सिलिपाट लकड़ी के साथ स्ट्रीम ड्रंजन के लिए जलाऊ लकड़ी हेतु जंगल को तबाह कर रास्ते बनाये जा रहे थे। यह बात 1870-80 के दशक की है। तभी जेम्स फोर्सिथ पिपरिया से पचमढ्डी सड़क बनावा रहे थे। जिनकी बनाई फोर्सिथ लॉज आज भी पचमढ्डी में मौजूद है। जिसमें से एक चीता उनके कुत्ते को उनके सामने से उठा ले गया था। उन्होंने हिंदुस्तानी कुलियों को मझी खोदने के काम पर लगाया था। मझी कुली खोदते और इसी पठारी मैदान पर उनके झोपड़ बन गए- बसने लगा मझी से राह बनाने वाले कुलियों का धरौंदा- मटकुली। उनके लिए अब यहाँ से पचमढ्डी अंदाजन 30 किलोमीटर था। लेकिन सीधे पहाड़ों को काटना था। रास्ता आगे बढ़ा- देनवा पर रपटा बना। जिसे पार करके सिंगाना तक रास्ता बन गया। उसके बाद पचमढ्डी की सीमा लगने लगी। देनवा दर्शन का विहंगम दृश्य पार करके पगारा पहुंचते हैं। कुलियों को अब हफ्ते की पगार इसी स्थान पर दी जाने लगी- तो पगारा बस गया। उसके आगे आमों के पेड़ों की झुरमुट में एक सरोवर के आपसपास कुछ कच्चे मकान दिखते हैं- यही कहलाया बारीआम। पथिक एक चाय की दुकान पर सोचते-सोचते दो चाय चढ़ा गए- फिर लाता इतिहास संवेदनशाली का आइटम से कुकूत रहा है। ये आदिवासी इस इलाके में मालिक थे- वुकूत ने उनको मालिक से रियाया बना दिया। अंग्रेजों और आदिवासियों के बीच संवाद बने कलार और साहू। उनके वंशज आज भी पिपरिया-पचमढ्डी में कारोबारी नेतृत्व करते हैं। आज़ादी के बाद पंजाब से आए सिक्खों ने उनके बीच से कारोबार में जगह बनाई है। जैसे अलका टॉकीज वाला सिंदार जयमल सिंह। सभी देनवा किनारे सरदार सितारा से रहने में महंगा आलीशान रिसोर्ट बनाया है। जो धनाढ्यों के लिए प्रकृति के सानिध्य में पाँच सितारा आरामगाह है।

हम जैसे मध्यम वर्गीय शौकिया लोगों के लिए मध्य प्रदेश टूरिज्म के घाँदे नुमा आशियाने हैं। अब आदिवासियों की वित्तीय मदद से स्टे-होम भी किफायती ठहराव के ठिकाने बनने लगे हैं। पातालकोट में ऐसे कई स्टे-होम हैं, जिन्हें आदिवासियों के पढ़े-लिखे बच्चे चलाते हैं- बहुत ही



किफायती- एक दिन का एक व्यक्ति का चौबीस घंटे रहना- खाना-पीना सब शामिल। मटकुली में रात गुजार कर जब हमारी सवारी तामिया की ओर बढ़ी, तब लगा जैसे सतपुड़ा ने अपने हे-भरे आँचल की एक ओर तह हमारे सामने खोल दी हो। पीछे छूटी मटकुली की बस्ती, सड़क के दोनों ओर घने होते जंगल और बीच-बीच में दिखाई देने वाली हल्की धुंध-मानो प्रकृति स्वयं हमारी अगवानी के लिए रास्ते पर खड़ी हो।

सवारी गाड़ी धीरे-धीरे सतपुड़ा की पहाड़ियों की ओर बढ़ रही थी। गाड़ी में हम मित्रों की अपनी-अपनी दुनिया हैं—कैलाश, प्रकृति को देखने के मामले में सबसे अधिक संवेदनशील, पेड़, बादल, पहाड़ या कोई छोटी-सी जलधारा—उसकी नजर से कुछ बचता नहीं था।

राजीव हर दृश्य में हास्य खोज लेने वाला- गंभीर से गंभीर क्षण को भी वह अपने एक वाक्य से हल्का कर देता। पथिक इतिहास और भूगोल का चलता-फिरता संदर्भ-ग्रंथ- रास्ते में पड़ने वाले हर स्थान के बारे में कोई न कोई जानकारी उसके पास रहती है। और रणधीर व्यावहारिक किस्म का आदमी है— कहीं रुकना है, कितना समय लगेगा, गाड़ी में कितना ईंधन है, खाने-पीने की व्यवस्था है या नहीं, इस सबकी चिंता रहती। पथिक बाहर के दृश्य देखता, कहीं मित्रों की बातचीत सुनता और मन ही मन यात्रा के अनुभवों को शब्दों में सहेजता चलता। सड़क के दोनों ओर बारिश से

धुले पेड़ चमक रहे थे। अचानक कैलाश ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा— देखिए, उस पहाड़ी के ऊपर बादल ऐसे बैठे हैं जैसे किसी ने हरे पहाड़ पर सफेद चादर डाल दी हो।

रणधीर ने तुरंत कहा— तुम्हें हर बादल में कविता ही दिखाई देती है। कभी पेट्रोल पंप भी दिखाई दिया है।

गाड़ी में जोरदार ठाका लगा। राजीव ने घड़ी देखते हुए कहा— हँसी-मजाक ठीक है, लेकिन अगला पड़ाव कहाँ है, यह भी तय कर लो। नहीं तो तुम्हारी कविता और मेरी चिन्ता दोनों जंगल में भटक जाएँगी। पथिक ने बिना किसी हड़बड़ा के कहा— आगे झिरपा की तरफ रास्ता जितना आगे बढ़ेगा, सतपुड़ा उतना ही खुलता जाएगा। कैलाश ने मुस्कुराकर कहा— तुम्हें रास्ता नहीं, पूरा सतपुड़ा याद है। मटकुली से आगे बढ़ते हुए जंगल और घना होता गया। कुछ देर बाद झिरपा दिखाई दिया। गाँव के आसपास का शांत वातावरण मन को भा गया। कैलाश की नजर घरों और खेतों पर थी। वह लोगों के सहज जीवन को बड़ी रुचि से देख रहा था। देखो, उसने कहा, इन लोगों की दुनिया कितनी छोटी दिखाई देती है, लेकिन शायद हमारी बड़ी दुनिया से कहीं अधिक भरीपूरी है। पथिक ने बात आगे बढ़ाई— सतपुड़ा के गाँवों को समझना हो तो इनके जंगल और इनके जीवन को सार्थ देखकर समझना होगा। यहाँ जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं है। रणधीर ने इस बार भी अपनी व्यावहारिक भूमिका

अंततः अमेरिकी दबाव ने असर
दिखाया—यह निष्कर्ष

— डॉ. प्रियंका सौरभ

परिवहन या छोटी दुकान के भुगतान पर शुल्क न लगे, यह गन के लिए महत्वपूर्ण है। मगर प्रश्न 2,000 की सीमा के ऊपर शुल्क था बड़े व्यापार तक सीमित रहेगी? भिन्न रहेगी, तो इसकी निगरानी कौन

यह मान लेना कठिन है कि व्यापारी अतिरिक्त लागत को हमेशा अपने मुनाफे से वहन करेंगे। बड़े संगठित कारोबार कुछ समय तक भुगतान पर प्रसंस्करण की लागत को सहन सकते हैं, पर छोटे व्यापारियों के लिए हर शुल्क मायने रखता है। किसान दुकानदार, ऑनलाइन विक्रेता, निजी शिक्षक, चिकित्सक, मरम्मत-कर्म और छोटे सेवा-प्रदाता अपनी लागत को किसी न किसी रूप में ग्राहक तक पहुंचा सकते हैं।

कल्पना कौजिए कि किसी व्यापारी पर प्रत्येक बड़े यूपीआई भुगतान पर एक प्रतिशत का शुल्क लगाता है। वह ग्राहक को वह सकता है कि नकद भुगतान करें, या डिजिटल भुगतान पर अतिरिक्त राशि दें, या वस्तु की कीमत में मामूली वृद्धि कर सकता है। ग्राहक को अलग से शुल्क दिखाई न दे, फिर भी वह बढ़ी हुई कीमत के रूप में भुगतान कर सकता है। इसीलिए केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि शुल्क प्राप्तकर्ता देगा। प्राप्तकर्ता भी बाजार का हिस्सा है और बाजार में कोई भी लागत अंततः कीमतों में समायोजित हो सकती है।

इससे डिजिटल भुगतान की उस सहजता पर भी असर पड़ सकता है जिसने यूपीआई को भारत के आर्थिक जीवन का सामान्य हिस्सा बना दिया है। आज ग्राहक को यह सोचने की जरूरत नहीं पड़ती कि भुगतान के लिए उसके पास नकद है या कार्ड। मोबाइल और बैंक खाते के सहारे कुछ सेकंड में लेन-देन पूरा हो जाता है। यदि बड़े भुगतान पर अतिरिक्त शुल्क, असफल लेन-देन, अलग-अलग अनुप्रयोगों की दरें या व्यापारी द्वारा मनमाना अधिभार आने लगे, तो यह भरोसा कमजोर हो सकता है।

अमेरिकी कंपनियों और ट्रंप प्रशासन के दबाव का आरोप राजनीतिक बहस का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन इसे प्रमाणित तथ्य की तरह प्रस्तुत करने से पहले ठोस दस्तावेज, आधिकारिक बयान और वार्ताओं का सार्वजनिक रिकॉर्ड सामने होना चाहिए। विदेशी कंपनियों का अपने हितों के लिए सरकारों पर दबाव बनाना असामान्य नहीं है। वैश्विक भुगतान कंपनियां चाहती हैं कि भुगतान बाजार में प्रतिस्पर्धा के नियम उनके अनुकूल हों। और घरेलू प्रणालियों पर लगाए गए संरक्षणवादी प्रावधान धीरे-धीरे कम हों।

- हिसार (हरियाणा)